

वैश्विकरण के परिपेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य (ममता कालिया के उपन्यास “दौड़” के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रोहिणी ज. पाटील

एम.ए., एम.फिल (अर्थशास्त्र), एम.ए., एम.फिल, पीएचडी (हिन्दी)

Hindi lecturer

आर. पी. डी. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बेलगांव

Email ID - rohini18patil83@yahoo.com

वै

श्विकरण या भूमंडलीकरण से विश्वभर में आर्थिक

क्रांति संभव हुई। समूचा विश्व एक ग्राम में तब्दील हुआ। 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना को मूर्त रूप देने का काम भूमंडलीकरण से संभव हो पाया। वैश्विकरण का संबंध अर्थतंत्र से होने के कारण समाज पर इसका प्रभाव बड़े पैमाने पर नजर आता है। साथ ही सामाजिक संरचना में इससे बदलाव आया। भूमंडलीकरण का सरोकार है हमारे बाजार से। भूमंडलीकरण या वैश्विकरण के कारण ज्यादा हमारे सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्य ध्वंस हुए विश्व को समेटने के चक्कर में हम अपनों से कट गए। इसके कारण उपजी स्पर्धा ने हमारे मानवाधिकार को बुरी तरह से रोंदा। अर्थतंत्र के भूलभुलैये में सबसे ज्यादा परिवार फसा। पारिवारिक हानी सबसे ज्यादा हुई। पारिवारिक विघटन रफ्तार से बढ़ने लगा। 'हम सब' से 'मैं' तक का सफर हमने बड़ी जल्दी नाप लिया। यही वजह है कि अकेलापन, अनिश्चिती, बेबसी जैसे रोग के शिकार हो गए।

भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही सर्वसमावेशी रही है। पर वैश्विकरण कि आँधी इतनी तेजी से भारत में फैली उसने हमारे संस्कृति को ही हिला डाला। वैश्विकरण ने हमारे सांस्कृतिक परिदृश्य को पूरी तरह से बदल डाला है, जिससे हमारे जीवनमूल्यों में भारी बदलाव आया है। वैश्विकरण के कारण हम उपभोक्तावादी संसार के मायावी व्यूह में धसते जा रहे हैं। पूरी दुनिया उपभोक्तावादी संस्कृति में बदल गई है। नई पीढ़ी पुरातन जीवन संदर्भों को नकार कर अपने लिए नए आदर्श स्थापित कर रही हैं। ऐशोआराम जीवन प्राप्ति कि

ललक के चलते मानवीयता, नैतिकता, संबंधों में लगाव कहीं लुप्त होते जा रहा है।

वैश्विकरण के आँधी में लुप्त होती जा रही मानवीय संस्कृति को बचाने का प्रयास साहित्य और विविधा कलाएं ही कर सकती है। युगीन परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में मनुष्य जीवन को मार्मिकता से प्रस्तुत करनेवाली सक्षम विधा उपन्यास है। हिन्दी उपन्यास साहित्य हमेशा ही विषम स्थितियों के विरोध में सजकता से काम करता आया है। समकालीन उपन्यासों में सद्यस्थितियों में बहुत तेजी से अपनी प्रवृत्ति को तत्कालीनता से जोड़ा है। इनमें वर्तमान स्थिति उपन्यास का केन्द्रीय विषय बनकर रेखांकित हुई हैं।

वैश्विकरण से प्रभावित भारतीय जनमानस को समकालीन लेखकों ने अपनी रचना का विषय बनाया है। 'दौड़' ममता कालिया का उपन्यास इस श्रेणी में खास अपना स्थान रखता है। ममता कालिया का 'दौड़' उपन्यास भूमंडलीकरण के चपेट में आए रिश्तों की कसमसाहट एवं पारिवारिक त्रासदी को चित्रित करता है। बच्चे अपनी करियर को ऊँची उड़ान देने हेतु घर से बाहर अपना मुकाम बनाते हैं। पति — पत्नी एक दूसरे से दूर रहते हैं। उनका अपना घर अब गेस्ट हाऊस बन चुका है। जहाँ वो सिर्फ छुट्टियों में आते हैं और उस घर के केअर - टेकर माता — पिता बन चुके हैं। अमेरिका में रह रहे बेटे के पास अपने पिता को मुखाग्नी देने के लिए समय नहीं इसलिए वो कहता है कि किराये के बेटे से मुखाग्नी दी जाए बाकी का कार्य हम ही आने के बाद करते हैं।

'दौड़' उपन्यास रेखा, राकेश, पवन, सघन इस एक ही परिवार के इर्द — गिर्द घुमती कहानी आज के हर एक परिवार कि कहानी बन गई है। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए माँ — बाप मिलकर सारी सुविधाएँ बनाते हैं। उन्हें महँगी और ऊँची शिक्षा देकर उनके भविष्य के सपनों के दरवाजे खोलते हैं। पर

फलस्वरूप उन्हें माँ — बाप के उन बेशकीमती क्षणों को याद करने का वक्त ही नहीं मिलता है। पवन और सघन मध्यमवर्गीय बच्चे हैं। उनका पालन — पोषण एक ऐसे घर में हुआ है जहाँ भारतीय संस्कारों के बीज बोये जाते हैं।

इलाहाबाद शहर होकर भी औद्योगिक शहरों से पिछड़ा शहर माना जाता है। पवन एम.बी.ए के बाद भाईलाल कंपनी में प्रशिक्षु सहाय्यक मैनेजर पद पर नियुक्त है। पवन अपने घर आठारह सौ किलोमीटर दूर अहमदाबाद में नौकरी के लिए जाने कि बात घर में बताता है तब माँ — बाप नाराज हो जाते हैं। वे चाहते थे कि पवन वहीं उनके पास रहकर नौकरी करें, पर पवन उनसे कहता है — “यहाँ मेरे लायक सर्विस कहाँ ? यह बेरोजगारों का शहर है। ज्यादा से ज्यादा नूरानी तेले की मार्केटिंग मिल जाएगी।”¹ माँ — बाप समझ गए थे की उनका शिखरचुंबी बेटा कहीं और बसेगा। लेकिन फिर भी पिताजी पवन से कहते हैं कि दिल्ली तक भी आ जाओ तो ? सच दिल्ली आना-जाना बिलकुल मुश्किल नहीं हैं। रात प्रयागराज एक्सप्रेस से चलो, सवेरे दिल्ली। कम से कम हर महीने तुम्हें देख तो लेंगे। या कलकत्ते आ जाओ वह तो महानगर है। लेकिन पवन पर आधुनिक होने का भूत सवार है।

वह आपने पापा से कहता है — “पापा मेरे लिए शहर महत्त्वपूर्ण नहीं है, कैरिअर है। अब कलकत्ते को ही लीजिए। कहने को तो महानगर है पर मार्केटिंग कि दृष्टि से एक दम लड्डू। कलकत्ते में प्रोड्यूसर्स का मार्केट है, कंज्यूमर्स का नहीं। मैं ऐसे शहर में रहना चाहता हूँ जहाँ कल्चर हो न हो, कंज्यूमर कल्चर जरूर हो। मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्ता संस्कृति चाहिए, तभी मैं कामयाब रहूँगा।”² पवन के यह विचार आज कि युवा पीढ़ी के विचार हैं। आज सभी कामयाबी के पीछे पड़े हैं।

एक और बहुराष्ट्रीय कंपनियां युवकों की जिंदगी सपनों से भर रहीं हैं और दूसरी तरफ घाटा देखकर शब्दों के तमाचे भी मार देती है। तब युवक इशारा समझ कर कंपनियां बदलते रहते हैं। उन्हें हर साल वेतनवृद्धि चाहिए, अन्यथा अपने अनुभव के बल पर वे हमेशा एक कंपनी से दूसरी कंपनी में ऊंचे पद पर जाने की सोचते हैं। इस दौड़ के पीछे भौतिक सुविधाओं का आकर्षण और उन्हें पाने की ललक रहती है। यहा जिंदगी आकर्षक जरूरी है मगर उसमें शांति नहीं है। इसमें पारिवारिक सुख — शांति, अपने लिए समय बचकर मनोरंजन करना, हँसी — खुशी, रिश्ते — नाते आदि के लिए

कोई स्थान नहीं है। बुढ़ापे में अपने माता — पिता की सेवा करना इसके लिए उनके पास समय नहीं है। बदले में चाहे जीतने रुपए देने के लिए तैयार हो जाते हैं किंतु बच्चों के स्नेह के लिए माँ — बाप तरसते रह जाते हैं।

कॉलनी में कमोबेश सभी की यह हालत थी। “इस बुढ़ा — बूढ़ी कॉलनी में सिर्फ सर्दी — गर्मी की लंबी छुट्टियों में कुछ रोनक दिखाई देती जब परिवारों के नाती — पोते अंदर बाहर दौड़ते खेलते दिखाई देते हैं। वरना यहा चहल पहल के नाम पर सिर्फ सब्जी वालों के या रद्दी खरीदने वाले कबाड़ियों के ठेले घुमते नजर आते”³ बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिए तैयार कर हर घर परिवार के माँ — बाप खुद एकदम असुरक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। घर से बाहर रहने वाले बच्चों के मन में धन, प्रतिष्ठा को लेकर अहंकार पनपने लगता है। जब से शहर की आदत लग गई है तब से गाँव का गंगाजल उसे गंदा लगाने लगता है और मिनरल वॉटर से ही वह प्यास बुझता है।

आधुनिक युग में मन के शांति के लिए मेडिटेशन करना जरूरी हो गया है। इसी कारण पवन और उसके साथी सरल मार्ग शिबिर की ओर आकृष्ट हो जाता है, की पवन उसकी शादी भी स्वामी के पंडाल में करता है। यहाँ तक पवन अपने परिवार वालों की इजाजत कि बिना स्टैला नामक युवती से विवाह तय करता है। माँ से स्टैला का परिचय करते हुए कहता है “माँ स्टैला मेरी बिजनेस पार्टनर, रूम पार्टनर तथा पत्नी तीनों हैं।”⁴

स्टैला से परिचय होने पर रेखा पवन से कहती है पुन्य यह सील बिल — सी लड़की तुझे कहाँ मिल गई ? क्योंकि रेखा अपनी बहू में सती और सावित्री के गुणों को देखना चाहती है।

पवन अपने माता — पिता को पूछे बगैर ही शादी तय करता है और अपनी माँ को समझाता है कि लड़का — लड़की एक दूसरे के तौर — तरीके समझने के बाद ही शादी करते हैं। यहा परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन होता नजर आता है। पवन की पत्नी स्टैला अपनी सासू माँ का आदर भले ही करती है, मगर आँचल सिर पर लेकर बार - बार कदम छूना नहीं चाहती। जब पहली बार वह रेखा से मिलती है तब फूलों का गुलदस्ता देकर स्वागत की औपचारिकता निभाती है।

वैश्विकरण के इस दौर में स्पर्धा इतनी तीव्र हो गई है कि हर कोई अपने उत्पाद को बेचने के लिए ग्राहकों को प्रलोभन दिखाया जाता है। इसके लिए प्रोडक्ट का आकर्षण

विज्ञापन, कीमत में छूट, होम डिलिवरी जैसी सहूलियत दी जाती है, हर कंपनी कि अपनी एक मार्केटिंग कि नीति है। हर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए संगीत एवं मनोरंजन के कार्यक्रमों का आयोजन करना, गिफ्ट रखना आदि तरीके अपनाये जाते हैं।

इस उपन्यास में लेखिका ने अत्यंत कुशलता से उपभोक्तावाद, वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण और उत्तर आधुनिक समय का दर्द नाक आख्यान रचा है। पवन और सघन ये नई उम्र के युवा लड़के इस उपन्यास ही नहीं बल्कि समकालीन समय कि युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये दो पात्र वह प्रतीक चरित्र हैं। जो महानगरों में दौड़ भाग का आधुनिक जीवन जीते मध्यवर्गीय लड़कों को दर्शाते हैं।

वैश्वीकरण से प्रभावित, प्रोफेशनल एथिक्स के साथ जी रहा पवन, सघन जैसा बड़ा सा वर्ग समाज में दिखाई देता है जिनके परिवारों में दिन-ब-दिन गहरी कड़वाहट आ रही है। मैं, मेरा जीवन, मेरी तरक्की 'मैं' से परे जाकर रिश्तों कि अहमियत को पहचान पाने का अभाव इस युवा पीढ़ी कि सबसे बड़ी विडंबना है।

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने इस वैश्वीकरण तथा भूमंडलीकरण के इस दौर में आधुनिकता के नाम पर समाज में आ रहे जबरदस्त बदलाव का मानवीय संबंधों पर पड़ा असर तथा तरक्की के पीछे दौड़ लगते युवा पीढ़ी और उनका जीवन विषयक नजरिया पाठकों के सामने रखा है।

आधार ग्रंथ —

1) 'दौड़' ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

1) 'दौड़' ममता कालिया पृष्ठ क्रं. 11

2) 'दौड़' ममता कालिया पृष्ठ क्रं. 40 - 41

3) 'दौड़' ममता कालिया पृष्ठ क्रं. 75

4) 'दौड़' ममता कालिया पृष्ठ क्रं. 51

संदर्भ ग्रंथ —

1) समकालीन हिन्दी उपन्यास - डॉ. प्रेमकुमार
इन्दु प्रकाशन अलीगढ़